National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019 1(24): 147-149
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Prof. Pralhad R Joshi
Department of Education,
Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth,
Tirupati

Correspondence:
Prof. Pralhad R Joshi
Department of Education,
Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth,
Tirupati

पर्यावरण शिक्षा: सतत विकास की आधारशिला

Prof. Pralhad R Joshi

Abstract (सारांश)

पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education) वर्तमान समय की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता है, जो मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करने का माध्यम बनती है। तीव्र औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर रूप ले चुकी हैं। जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, जल संकट, जैव विविधता का क्षरण तथा भूमि क्षरण जैसी समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए चुनौती बन गई हैं। इस संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि जागरूकता, संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व और सतत जीवनशैली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है। यह लेख पर्यावरण शिक्षा की संकल्पना, उद्देश्य, आवश्यकता, ऐतिहासिक विकास, शिक्षण पद्धतियाँ, पाठ्यक्रम में समावेशन, भारत में इसकी स्थिति, चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। निष्कर्षतः यह प्रतिपादित किया गया है कि पर्यावरण शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि है, जो वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होती है।

Introduction (परिचय)

पर्यावरण वह समग्र परिवेश है जिसमें जीवधारी निवास करते हैं। इसमें भौतिक, जैविक और सामाजिक तत्व सम्मिलित होते हैं। मानव और पर्यावरण का संबंध परस्पर निर्भरता पर आधारित है। किंतु आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में मानव ने प्रकृति के साथ असंतुलित व्यवहार किया है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हुए हैं। ऐसे समय में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ जाती है। पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति पर्यावरण के घटकों, समस्याओं और उनके समाधान के प्रति जागरूक होता है तथा जिम्मेदार व्यवहार अपनाता है।

1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन और 1977 में त्बिलिसी सम्मेलन ने पर्यावरण शिक्षा के वैश्विक स्वरूप को स्पष्ट किया। भारत में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति और सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के माध्यम से इसे शैक्षिक व्यवस्था में स्थान दिया गया। आज यह शिक्षा केवल विद्यालयों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता का व्यापक अभियान बन चुकी है।

पर्यावरण शिक्षा की संकल्पना

पर्यावरण शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो व्यक्ति को पर्यावरणीय ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण, कौशल और सहभागिता की भावना प्रदान करती है।

इसका उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि व्यवहार में परिवर्तन लाना है। Tbilisi Conference (1977) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के प्रमुख तत्व हैं:

1. जागरूकता (Awareness)
2. ज्ञान (Knowledge)
3. दृष्टिकोण (Attitude)
4. कौशल (Skills)
5. सहभागिता (Participation)

इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाती है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

पर्यावरण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
2. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का भाव विकसित करना।
3. पर्यावरणीय समस्याओं की समझ और समाधान की क्षमता विकसित करना।
4. सतत विकास की अवधारणा को व्यवहार में लाना।
5. सामाजिक उत्तरदायित्व और सहभागिता की भावना को बढ़ावा देना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से व्यक्ति न केवल पर्यावरणीय ज्ञान अर्जित करता है, बल्कि उसे व्यवहार में भी उतारता है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

आज पृथ्वी अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकटों का सामना कर रही है।

- जलवायु परिवर्तन : वैश्विक तापवृद्धि से हिमनदों का पिघलना और समुद्र स्तर में वृद्धि।
- वायु प्रदूषण : महानगरों में प्रदूषित वायु से स्वास्थ्य समस्याएँ।
- जल संकट : भूजल स्तर में गिरावट।
- जैव विविधता का ह्रास : वन्यजीवों की प्रजातियों का विलुप्त होना।

इन समस्याओं के समाधान हेतु केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं; आवश्यक है कि नागरिकों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व विकसित हो। यही कार्य पर्यावरण शिक्षा करती है।

पर्यावरण शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

विश्व स्तर पर पर्यावरण शिक्षा का औपचारिक विकास 1970 के दशक में प्रारंभ हुआ। 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन ने पर्यावरण संरक्षण को वैश्विक मुद्दा बनाया। इसके पश्चात 1977 के त्बिलिसी सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा के सिद्धांतों और उद्देश्यों को निर्धारित किया गया। भारत में 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा 2003 में सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसार सभी स्तरों पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने भी स्नातक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया।

भारत में पर्यावरण शिक्षा

भारत में पर्यावरण शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के माध्यम से समाहित किया गया है। प्राथमिक स्तर पर इसे क्रियात्मक गतिविधियों के रूप में, माध्यमिक स्तर पर पृथक विषय के रूप में तथा उच्च शिक्षा में पर्यावरण अध्ययन और पर्यावरण विज्ञान के रूप में पढ़ाया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने पर्यावरण शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश और पाठ्यसामग्री विकसित की है। विभिन्न गैर-सरकारी संगठन भी जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से योगदान दे रहे हैं।

पर्यावरण शिक्षा की शिक्षण पद्धतियाँ

पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं—

1. परियोजना पद्धति (Project Method)
2. अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)
3. क्षेत्र भ्रमण (Field Visits)
4. समूह चर्चा और वाद-विवाद
5. सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम

इन पद्धतियों से विद्यार्थियों में व्यावहारिक समझ और संवेदनशीलता विकसित होती है।

पर्यावरण शिक्षा और सतत विकास

सतत विकास का अर्थ है वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करना कि भविष्य की पीढ़ियाँ अपनी आवश्यकताओं से वंचित न हों। पर्यावरण शिक्षा सतत विकास के तीन स्तंभों—आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय—के मध्य संतुलन स्थापित करने में सहायक है। यह उपभोग की आदतों में परिवर्तन लाकर संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करती है।

पर्यावरण शिक्षा की चुनौतियाँ

यद्यपि पर्यावरण शिक्षा का महत्व व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, फिर भी इसके समक्ष कुछ चुनौतियाँ हैं—

- पाठ्यक्रम में सीमित समय
- व्यावहारिक गतिविधियों का अभाव
- प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की असमानता

इन चुनौतियों का समाधान नीति निर्माण और सामाजिक सहयोग से संभव है।

निष्कर्ष

पर्यावरण शिक्षा आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह केवल शैक्षिक विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है। मानव और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए पर्यावरणीय चेतना अनिवार्य है। यदि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक और उत्तरदायी बने, तो अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। इसलिए आवश्यक है कि पर्यावरण शिक्षा को प्रारंभिक स्तर से उच्च शिक्षा तक प्रभावी रूप से लागू किया जाए और इसे सामाजिक आंदोलन का स्वरूप दिया जाए। सतत विकास के लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय मूल्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचें।

संदर्भ ग्रन्थसूची

1. Government of India. National Education Policy 1986. Ministry of Human Resource Development, 1986.
2. NCERT. Environmental Studies: Position Paper. National Council of Educational Research and Training, 2005.
3. Palmer, Joy A. Environmental Education in the 21st Century: Theory, Practice, Progress and Promise. Routledge, 1998.
4. Sharma, R. A. Environmental Education. Surjeet Publications, 2009.
5. UNESCO. Tbilisi Declaration: Intergovernmental Conference on Environmental Education. UNESCO, 1977.
6. United Nations. Our Common Future. Oxford University Press, 1987.